Sl.No. :

नामांक Roll No.

यहाँ से काटिए

No. of Questions – 3

No. of Printed Pages – 7

SS–34–1–T.W.(Hindi)

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2018

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2018

हिन्दी टंकण लिपि

(TYPEWRITING HINDI)

समय : 1 **घण्टा**

पूर्णांक : 40

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।

2) प्रत्येक कागज के एक तरफ टंकण करें।

3) प्रत्येक प्रश्न को नये पृष्ठ से आरम्भ करना है।

4) प्रत्येक लाइन के बीच में द्विगुणित अवकाश (Double Spacing) देकर टंकण करना है।

5) प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक सजावट के निर्धारित है।

यहाँ से काटिए

1) **निम्न अवतरण को टंकित कीजिए :**

अंक –18

सजावट – 2

कुल – 20

दो पीढ़ियों में सामंजस्य का रास्ता

परिवार निर्माण एक साधना है। एक ही परिवार में विभिन्न आयु एवं चिंतन के सदस्य एक साथ रहते हैं। उनके सोचने की शैली अलग–अलग होती है। यह दो पीढ़ियों के बीच विचारों का अन्तर सदियों से चला आ रहा है। यह एक सच्चाई है। आज यह एक समस्या का रूप ले चुका है। इस सच्चाई को न तो पुराने लोग समझने को तैयार हैं और न आज की युवा पीढ़ी। हर एक व्यक्ति अपने जमाने और विचारों को सही कहता है। यह अन्तर सोच में आया है, विचारों में आया है। हर कोई एक दूसरे को गलत समझता है। दादी, नानी अपने जमाने के गुण गाती हैं, वैसा ही दूसरों से अपेक्षा रखती है।

नया रक्त तो आज के हिसाब से जीना चाहता है। उसे अपने जमाने, अपणे विचारों पर गर्व है। वह कुछ ऐसा करना चाहता है, जो विस्फोटक हो, चमत्कारिक हो, सबसे अलग हो, नई जमाने की पीढ़ी। वृद्धों के लिए अतीत

सुखद होता है, तो तरूण भविष्य के सुनहरे सपने देखता है। वर्तमान से दोनों सन्तुष्ट नहीं हैं। वृद्ध अतीत को वर्तमान में देखना चाहते हैं जब कि तरूण भविष्य के सपने आज ही पूरा कर लेना चाहते हैं। हर पीढ़ी को अपना वर्तमान सुखद लगता है। तीन पीढ़ी में तो सामंजस्य की संभावना ही नहीं रहती है।

आज की पीढ़ी नये युग के साथ चलना पसंद करती है, वहीं परम्परागत सोच से ग्रस्त पुराने लोग किसी भी बदलाव को सरलता से स्वीकार नहीं कर पाते। वे चाहते हैं कि सब कुछ उनकी इच्छानुसार चले। वे अपने परम्परागत विचार, रीति – रिवाज सब आज की पीढ़ी पर थोपना चाहते हैं, जो युवाओं को स्वीकार नहीं है। एक तरफ़ नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी के लोग कम पढ़े – लिखे, दकियानूसी और परिवर्तन विरोधी लगते हैं, तो दूसरी तरफ पुरानी पीढ़ी, तीसरी पीढ़ी को अधिक भौतिक वादी और संस्कारहीन मानती है। इसी वजह से दोनो पीढ़ियों में तालमेल नहीं हो पाता है। दोनों के बीच विचारों की ये दूरियाँ आज की कहानी नहीं है। सदियों से यह क्रम चला आ रहा है। प्रत्येक पीढ़ी अपने जमाने के गुण गाती है। और नई पीढ़ी में कमी निकालती है। पर इससे बेफिक्र होकर। नौजवान भी बड़े – बूढ़ों की किसी बात की परवाह किए बिना, परिवर्तन की राह पर अग्रसर होना चाहते हैं। यही अलग तरह के विचार एक – दूसरे से सामंजस्य बनाने में रूकावट डालते हैं।

बदलता वक्त हर चीज को बदल देता है। वक्त के साथ न केवल हमारे काम करने के तौर – तरीके बदलते हैं, बल्कि हमारी सोच में भी अन्तर आ जाता है। अगर आज की युवा पीढ़ी बदलते वक्त के साथ बदलना चाहती है तो उसके साथ सामंजस्य बिठाने की थोड़ी कोशिश तो पुरानी पीढ़ी को भी करनी ही पड़ेगी, लेकिन ऐसा होता नहीं है। पुरानी पीढ़ी एक ही ढर्रे पर चलना चाहती है। वह बदलाव नहीं चाहती, जबकि युवा पीढ़ी परंपरागत कायदे कानून को बिना वजह का बंधन मानती है।

भारतीय संस्कृति अपने बड़ों के सामने सिर झुकाकर उनकी बात सुन लेने का ही पक्ष लेती है, इसलिए बुजुर्ग लोग यही उम्मीद अपने से छोटों से रखते हैं। वे बार–बार इसके लिए बच्चों को रोकते हैं। बार–बार टोकने से बच्चों में आक्रोश बढ़ता है। इसलिए इन परिस्थितियों से बचना चाहिए।

आज की परिस्थितियों के लिए सोशल साइट्स, टीवी, फिल्में तो जिम्मेदार हैं ही, मगर माता–पिता भी कम जिम्मेदार नहीं है। उनके पास अपने बच्चों के लिए पर्याप्त वक्त नहीं हैं। ऐसे में बालक बालिकाओं पर परिवार की अपेक्षा बाहर का असर भी रहता है। इन परिस्थितियों से उबरने के लिए दोनों पीढ़ियों को समझदारी और धैर्य की आवश्यकता है। ऐसे में बुजुर्ग नई पीढ़ी से तकनीकी बातें सीखें और युवा बुजुर्गों से उनके अनुभव साझा करें तो मन – मुराव व रकराव में कमी होने की सम्भावना नजर आयेगी। इस प्रकार समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

2) मैसर्स श्यामदास सुखराम एण्ड कम्पनी

(नमक के थोक व्यापारी एवं कमीशन एजेन्ट)

टेलिफोन नंः 0198-222775 सी 18, गीता भवन मार्ग,

जी एस टी नः 741-182200 मुकन्दरा टावर – लखनऊ

फैक्स – 0181-1958176 (उ. प्र.)

पत्र संः 17/1958 दिनांक 17/06//2017

सर्वश्री बालाजी फूड प्रोडक्टस,

पोस्ट बाक्स संः 110 बी,

सिविल लाइन रोड़,

कानपुर।

विषय : – आपके द्वारा उत्पादित माल की एजेन्सी लेने बाबत।

प्रिय महोदय,

अत्यन्त हर्ष के साथ लिखना पड़ रहा है कि आप हमारे शहर में आपके द्वारा उत्पादित माल की एजेन्सी देना चाहते हैं। हमारी फर्म आप द्वारा उत्पादित माल की एजेन्सी लेने की इच्छुक है।

जैसा कि आपको सर्व विदित है कि हमारी फर्म पिछले 15 वर्षों से आप द्वारा उत्पादित माल को बेचने का कार्य कर रही है। पिछले चार वर्षों से आपके माल का सर्वाधिक विक्रय करने के कारण लगातार आप हमें कानपुर में आयोजित कार्यक्रमों में बुलाकर हमारा सम्मान भी करते आ रहे हैं।

आप द्वारा बताई गई शर्तें हम पूर्ण करने में सक्षम हैं। हमारे पास पर्याप्त गोदाम 100 गुणा 150 फुट व दूसरा गोदाम 150 गुणा 200 फुट है।

वित्तिय दृष्टि से हम आपके पास 10 लाख रूपये अग्रिम जमा के रूप में रखने को तैयार है।

अतः आपसे निवेदन है कि यह एजेन्सी हमें देने का कष्ट करें।

धन्यवाद।

भवदीय,

श्यामदास सुखराम के लिए

सुखराम

साझेदार

3) **निम्नलिखित सारणी को यथोचित रूप देकर टंकित कीजिए :**

अंक – 8

सजावट – 2

कुल – 10

प्रमुख जिलेवार छात्र – छात्राओं का उपस्थिति विवरण (प्रतिशत में)

क्र.सं.	जिला का नाम	2016		2017	
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा
1	जयपुर	93.77	94.06	98.05	97.00
2	जैसलमेर	96.67	96.45	96.77	97.02
3	जोधपुर	92.92	94.07	93.25	94.88
4	उदयपुर	91.50	92.44	94.21	92.50
5	कोटा	98.99	99.23	99.01	98.91
6	बून्दी	91.46	93.45	94.32	94.27
7	अलवर	96.45	98.42	96.55	98.63
8	बाँसवाड़ा	90.48	91.48	92.82	93.23
9	अजमेर	99.63	93.39	99.01	95.32
10	पाली	96.97	97.13	97.95	97.23